श्री ज़ैल सिंह : मैंने स्पेशल कोर्ट के सम्बन्ध में पहले ही कह दिया था कि हमने सरकारों को यह हिदायत दे रखी है कि ऐसे कहीं वाक्या हों तो उसमें स्पेशल कोर्ट बनाने चाहियें । इसका फायदा यह होता है कि सबूत खराब नहीं होते, एवीडेंस उसी वक्त ली जाती है, मुकदमा चल जाता है ।

आपको मालूम है कि बिहार में जब पहली बार पिपरा गांव के वाके के बाद स्पेशल कोर्ट मुकर्रर किया गया तो बेलछी के फैसले के भी पहले उसका फैसला हो गया और उन लोगों को सज़ा दी गई ।

श्री राम विलास पासवान : हथियार ?

श्री ज़ैल सिंह : हथियार देने का मतलब यह नहीं है कि सब को हथियार बन्द कर दें, फिर लडाई खत्म हो जाएगी । हमने यह ज़रूर हिदायत की है कि जहां ऐसे वाकयात हो जाएं, या पुलिस ने हरिजनों से शहादतें ले कर डाकुओं और बदमाशों को पकड़ा हो ऐसी जगहों पर सरकार उनका ध्यान रखे और हरिजनों को भी शस्त्र दिए जायें, ताकि वे मारे न जाएं ।

श्री राम विलास पासवान : अभी तक कितने हथियार दिए गए हैं ?

श्री ज़ैल सिंह : यह भी पूछ लीजिए । हम बता देंगे । अभी कैसे बताऊं ?

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : अध्यक्ष महोदय, उत्तर प्रदेश में डाकू समस्या के उन्मूलन के नाम पर नकली मुठभेड़ें दिखाई जा रही हैं ।

(व्यवधान)

एक माननीय सदस्य : इससे क्या सम्बन्ध है ?

अध्यक्ष महोदय : आप बीच में क्यों बोल रहे हैं ?

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : अब तक लगभग पांच हजार लोगों के मारे जाने की ख़बर है । क्या यह सच है कि मुठभेड़ों में जो लोग मारे गए हैं, उनमें से अधिकांश हरिजन हैं ? ख़ास कर बांदा ज़िले की घटना और इलाहाबाद में जो कुछ हुआ है—हरिजनों को घर से ले जा कर खेत में खड़ा कर मार दिया गया, मैं जानना चाहता हूं कि क्या सरकार इन मामलों की जांच कराएगी और उत्तर प्रदेश से पूरा विवरण प्राप्त करेगी । क्या उत्तर प्रदेश की सरकार से केन्द्र सरकार की सहमति है कि अधिकांश डाकू हरिजन हैं ?

श्री ज़ैल सिंह : सत्कार-योग्य वाजपेयी जी की इत्तिला ग़लत है, जिस आधार पर वह कह रहे हैं । न तो यह बात है कि हरिजन ज्यादा मारे गये हैं और न ही यह बात है कि हमने इस बारे में कुछ पूछा नहीं है । जिन वाकयात की ख़बर अखबारों में या मेम्बर साहबान ने हमको दी, उनके बारे में हमने उत्तर प्रदेश की सरकार से पूछा । कुछ विवरण आया है, कुछ विवरण नहीं आया है । लेकिन यह बात निराधार है कि कभी किसी ने यह कहा हो कि हरिजन डाकुओं की गिनती ज्यादा है । न ही वहां जात-पांत देखी गई है । न ही वहां कोई लोक दल बना, जिसने जात-पांत का ज़िक्र किया ।

"Bharat Bandh" January, 1982

+

*47. SHRI RAJNATH SONKAR SHASTRI:

SHRI AMAR ROYPRADHAN

Will the Minister of LABOUR be pleased to state:

(a) what were the causes for giving all for Bharat Bandh by the Trade

Leaders on 19 January 1982 and what were the consequences thereof; and

(b) what steps have been taken to redress the grivances of the trade unions, with details thereof?

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF LABOUR (SHRI DHARMVIR): (a) The call for the Bandh was aparently the result of a decision taken on 23rd November, 1981 by some central organisations of trade unions with the object of paralysing essential services, dislocating industrial production, disrupting work in Government offices and bringing about industrial disharmony generally on the 19th January 1982. The Bandh Call evoked little response. Essential services, by and large, functioned normally throughout the country. Attendance in Government offices was generally normal.

(b) Matters relating to industrial relations and other matters concerning welfare of workers are continuously reviewed by Government. As a result, steps have been taken from time to time to augment the industrial relations machinery and to enlarge benefits under the various labour laws.

श्री राजनाथ सोनकर शास्त्री : मंत्री महोदय ने हमारे प्रश्न के उत्तर में एक लम्बा-चौड़ा ** बोल दिया है । (व्यवधान) ।

अध्यक्ष महोदय : यह अनपार्लियामेंटरी है ।

श्री राजनाथ सोनकर शास्त्री : उनका कहना है कि 19 जनवरी के भारत बन्द का लक्ष्य था औद्योगिक उत्पादन में बाधा उत्पन्न करना, सरकारी कार्यालयों के कार्य में गड़बड़ी करना और औद्योगिक अशान्ति उत्पन्न करना । मैं मंत्री महोदय से यह पूछना चाहता हूं कि यू० पी० और मध्य प्रदेश में जो बहुत सी गिरफ्तारियां हुई और वाराणसी और जौनपुर में सैकड़ों लोगों पर लाठी-चार्ज हुआ और लोग जेल गए, तो उस का क्या कारण था और इस में ज्यादातर मजदूर थे तो क्या वह गड़बड़ी कर रहे थे, यह मंत्री जी बताएं ।

श्रम मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री भागवत झा आजाद) : अध्यक्ष महोदय, यह मैं जानता था कि इस बयान को सुनने के बाद विरोध के माननीय सदस्यों को बड़ा दुख होगा क्योंकि सच सुनना बड़ा कठिन होता है . . . (व्यवधान) . . . और चूं कि अब यह बात स्पष्ट हो गई है कि 19 तारीख की हड़ताल में देश की जनता ने चाहे वह किसान हो, मजदूर हों, दूकानदार हों, भाग नहीं लिया इसलिए आप को दुख है . . . . (व्यवधान) . . . अगर आपकी पार्टी के . . . (व्यवधान) . . जरा बैठिए रनिंग कमेंट्री मत करिए। . . . . (व्यवधान) . . . .

Mr. Speaker: Question Hour is over.

WRITTEN ANSWERS TO QUESTIONS

Inclusion of Maithili language in Eighth Schedule of Constitution

*48. SHRI BHOGENDRA JHA: Will the Minister of HOME AFFAIRS be pleased to refer to the reply given to Unstarred Question No. 1724 on 2 December, 1981 regarding inclusion of